: पंचम अध्याय :

उपसंहार

आधार ग्रंथ

संदर्भ ग्रंथ

पंचम अध्याय

उप संहार -

यशपाल के उपन्यासों के सशस्त्र क्रान्तिकारी तथा "सामाजिक क्रान्तिकारी पात्रों के चरित्र" चित्रण के अध्ययन के उपरान्त कुछ -महत्वपूर्ण निष्कर्ष स्पष्ट हो जाते हैं।

१] यशपाल के उपन्यासों में " सशस्त्र क्रान्तिकारी पात्रो के अपेक्षा "सामाजिक क्रान्तिकारी पात्रो" का ही चित्रण अधिक मात्रा में मिलता है।

यशपाल के प्रथम उपन्यास "दादा कामरेड " में "कामरेड दादा" "बी॰ एम॰" तथा उनकी सशस्त्र क्रान्तिकारी पार्टी के साथी प्रथमत: सशस्त्र क्रान्तिकारी के रूप में चित्रित हुये हैं। प्रस्तुत उपन्यास के दादा चंद्रशेखर आजाद, हरीश। - स्वयं यशपाल, तो बी॰ एम॰ धन्वंतरी के रूप में दीख पडते हैं। दादा प्रारंभ मे सशस्त्र क्रान्तिकारी हैं, परंतु हरीश की सामाजिक क्रान्ति देखकर वे प्रभावित होते हैं। और हरीश की मदद करते हैं। लेखक की सशस्त्र। क्रान्ति संबंधी टूटती आस्थाही प्रस्तुत पात्रों के द्वारा प्रकट हुयी हैं। "दादा कामरेड" के बाद लिखे सभी उपन्यासो में "सामाजिक क्रान्ति" अथवा "समाजवादी दृष्टिकोन" से पात्रो का चरित्र चित्रण किया हैं।

"दादा कामरेड" के - हरीश, शैल, रफीक, रॉबर्ट, अख्तर, देशद्रोही के - डॉ॰ खन्ना, राजदुलारी, दिव्या के - मारिश, पार्टी कामरेड के गीता और भावरिया, "मनुष्य के रूप" के - भूषण "झूठा सच के डॉ॰ प्राणनाथ, गिल, आबिद, कनक, "अमिता" के - हिता और मोद, "बारह घण्टे" के - लॉरेन्स, "अप्सरा का श्राप" की मेनका, क्यों फंसे के भास्कर, पुनैया, "मेरी तेरी और उसकी बात" के - अमर और उषा ये सभी पात्र विशुद्ध सामाजिक समता का आग्रह के साथ प्रतिपादन करते हुये नजर आते हैं। सशपाल के ये सभी पात्र उपन्यासोंके नायक और नायिकाओंके स्थान पर आसीन हैं।

२] यशपाल के कुछ उपन्यासोंके पुरुष पात्र मार्क्सवादी दर्शन का खुलकर प्रचार करते हुअे से नजर आते हैं। यशपाल के उपन्यास "दादा कामरेड" का हरीश, "देशद्रोही" का डॉ॰ खन्ना, "दिव्या" का मारिश, "मनुष्य के रूप" का भूषण आदि पात्रो में मार्क्स वाद की प्रचारात्मक भूमिका अधिक रही हैं। लेखक की इस प्रचारात्मक भूमिका का विरोध भी समीक्षको ने किया हैं। अगले उपन्यासों में यह प्रचारात्मक भूमिका कम होती चली गयी हैं। सिर्फ "बारह घण्टे" के लॉरेन्स में ही यह प्रचारात्मकता कुछ मात्र में पायी जाती हैं।

३] यशपाल के उपन्यास घटना प्रधान होने के कारण पात्रो की सामाजिकता पर कही कहीं राजनीति हावी होती हुअी दीख पड़ती हैं। यशपाल के अधिकांश उपन्यास चरित्र चित्रण प्रधान नहीं हैं। उनके उपन्यासों में देश विभाजन प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध , कांग्रेस का सन १९४२ का आंदोलन, स्वतंत्र देश की कांग्रेसकी नीति आदि राजनितिक घटनाओ को अधिक महत्व दिया हैं। "झूठा सच" का जयदेव पुरी सामाजिक क्रान्तिकारी विचारों का होते हुअे भी देश विभाजन के बाद कांग्रेसी नीति में पुलकर स्वार्थ साधन के खेल करता रहता हैं।

४] यशपाल ने अपने उपन्यासों के पात्र समाज के मध्य वर्ग के तीन स्तरों से ही चुने गए हैं।

इस दृष्टि से तो यशपाल का पात्रोंका चुनाव मौलिक लगता हैं। प्रेमचंदजी के पात्र उच्च और निम्न वर्ग के थे, परंतु चूँकि स्वयं यशपाल ही मध्य वर्ग के मध्य स्तर के होनेके कारण उनके सभी उपन्यासोंके महत्व पूर्ण पुरुष और स्त्री पात्र मध्य वर्ग के ही हैं। जैसे - "दादा कामरेड" के रॉबर्ट, दादा, हरीश, यशोदा, अमरनाथ, "देशद्रोही" के खन्ना और राज, "दिव्या" के मारिश, "पार्टी कामरेड" की गीता, "झूठा सच के उर्मिला, सोमराज, प्राणनाथ, गिल, "बारह घण्टे" के लॉरेन्स विनी पेंण्टम, "क्यो फँसे" की मोती, डॉ॰ मिस, "मेरी तेरी और उसकी बात" की उषा आदि॰

५] यश पाल के उपन्यासों के "सामाजिक क्रान्तिकारी पात्रो" में पुरुष पात्रो की अपेक्षा स्त्री पात्र ही अधिक प्रभावी और गतिशील हैं।

यशपाल के पुरुष पात्रो में गतिशील और प्रभावी पुरुष पात्र ये हैं "दादा कामरेड" दादा, हरीश, "देशद्रोही" डॉ॰ खन्ना, "दिव्या" - मारीश, "पार्टी कामरेड" - भावरिया, "झूठा सच" - डॉ॰ प्राणनाथ गिल, "बारह घण्टे" - लॉरेन्स आदि।

यशपाल के स्त्री पात्रो में गतिशील स्त्री पात्र इस प्रकार हैं। "दादा कामरेड" - शैल, "देशद्रोही" - राजदुलारी, "दिव्या" - दिव्या "पार्टी कामरेड" - गीता, "मनुष्य के रूप" - सोमा, "झूठा सच" - तारा, "अमिता" - हिता, "बारह घण्टे" - बिनी, "अप्सरा का श्राप" अप्सरा मेनका, और सबसे अधिक गत्यात्मक पात्र है "मेरी तेरी और उसकी बात" की उषा।

ये सभी नारियाँ आत्मनिर्भर जीवन चाहनेवाली, स्वतंत्र विचारों वाली और विवाह बंधन का सख्त विरोध करनेवाली नारियाँ हैं। शैल का निर्वस्त्र होना, राजदुलारी का अपने प्रथम पति को आसरा न देना, सोमा का मालिक बदलते रहना, तारा का प्राण नाथ के साथ रहना, बिनी का पुनर्विवाह के लिए तैयार होना तो उषा का स्वतंत्र जीवन जीते रहना ये सभी बातें लगती हैं अश्लील परंतु स्त्री स्वतंत्रता और समाजवादी की दृष्टि से अनावश्यक नही लगती। सभी नारियाँ पुरुषो की दासता तोडती हुंई प्रगतिशील नारियाँ हैं। वे उन्मुक्त यौन संबंधोंको पसंत करती हैं। हर एक उपन्यास में पुरुष पात्रोपर नारी पात्रो का, प्रभाव दीख पडता हैं।

६] समाजवाद के मुक्त यौन संबंध सिध्दान्त का ही अधिक प्रचार यशपाल के सभी पुरुष तथा स्त्री पात्र करते हैं।

समावाद में स्त्री पुरुष समानता को विशेष महत्व दिया हैं स्त्री को विवाह बन्धन मे बध्द होकर पुरुष की जन्म की दासी नहीं होना चाहिए अथवा पुरुष को किसी स्त्री के पाशमें बध्द नहीं रहना चाहिए। जो जी में आये, उसी की मर्जी के अनुसार यौन संबंध स्थापित करने में

समाजवाद किसी भी प्रकार की अनीति नहीं मानता। "दादा कामरेड" में शैल हरीश के संबंध इसी प्रकारके हैं। हरीश की मृत्यु के बाद शैल रोती नहीं बैठती बल्कि दादा को साथ लेकर नया जीवन शुरु कर देती हैं। "देशद्रोही " डॉ॰ खन्ना पर नूरन, जबरदस्ती करती हैं तो राज दूसरा ब्याह करती हैं। "मनुष्य के रुप" की सोमा धनसिंह के साथ भाग जाने में यही विचार करती है । "झूठा सच" की तारा "नब्बू" तथा अन्य गुण्डो द्दारा लुटी जानेपर भी डॉ॰ प्राणनाथ के साथ नया जीवन शुरु कर देती हैं। जयदेव पुरी उर्मिला और कनक के साथ एकसाथ यौन संबंध रखनेमें कोई हीनता महसूस नहीं करता। "बारह घण्टे" के बिनी और फेण्टम के पुर्नमिलन के निर्णय के पीछे यही मुक्त यौवन स्वतंत्रता के विचार हैं। " क्यों फंसे" उपन्यास तो केवल इसी सिध्दान्त की प्रतिष्ठापना के लिए ही लिखा गया हैं। इस उपन्यास का भास्कर अपनीमामी , डॉ॰ मिस, हेना और मोती के साथ संबंध रखता हैं। इस संबंध मे स्वार्थ की भावना नहीं रहनी चाहिए, ऐसा उसका मत हैं। वेश्याओं की हिमायती पुनैया भी इसी मत काप्रचारक हैं। "मेरी तेरी और उसकी बात" की उषा अपने पति अमर को छोड अन्य दो मित्रो के साथ संबंध रखती हैं।

यशपाल स्वयं इस मुक्त यौन संबंध के हिमायती थे। उनके चरित्र से यह स्पष्ट हुआ हैं। इसी के परिणाम स्वरुप उनके उपन्यासों के सभी पुरुष और स्त्री पात्र यौनवादी दीख पडते हैं।

७] "अमिता" उपन्यास को छोड अन्य सभी उपन्यासों मे यशपाल के पात्र यशपाल के विचारों के वाहक के रुप में दीख पडते हैं।

"अमिता" में हिता और मोद के चित्रण द्दारा तत्कालीन दास प्रथा पर कुठाराघात किया गया हैं।

८] कुछ पात्र प्रवाह पतित होने के कारण अस्वाभाविक लगते हो वे किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करते। मनुष्य रुप की सोमा ऐसा ही अस्वाभाविक पात्र लगता हैं। सोभा से पहाडन तक की सोमा के जीवन की तब्दीलियाँ अविश्वसनीय लगती हैं।

मई, ९२. १२८

प्रा० विजय पि. जाधव